SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 5

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

भाग - 4

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पत्रिकाऐं :-

- 18वीं सदी के आरंभ से पत्रिकाओं का प्रकाश शुरू हुआ।
- इन पत्रिकाओं में सम-सामयिक घटनाओं की खबर के साथ मनोरंजन भी परोसा जाने लगा।
- अखबार और पत्रों में युद्ध और व्यापार से जुड़ी जानकारी के अलावा दूर देशों की खबरें होती थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वैज्ञानिक एवं दार्शनिक पुस्तकें :-

- वैज्ञानिक और दार्शनिक भी आम जनता की पहुँच के बाहर नहीं रहे।
- प्राचीन और मध्य कालीन ग्रंथ संकलित किये गये।
- नक्शों के साथ-साथ वैज्ञानिक खाके भी बड़ी मात्रा में छापे गये।
- जब आइजैक-न्यूटन जैसे वैज्ञानिक ने अपने अविष्कार प्रकाशित करने शुरू किये तो उनके लिए विज्ञान-बोध वाला एक बड़ा पाठक वर्ग तैयार हो चुका था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- टॉमस – पेन, वॉल्वेयर ओर ज्याँ जाक रूसों जैसे दार्शनिकों की किताबें भी भारी मात्रा में छपने ओर पढ़ी जाने लगीं।
- विज्ञान, तर्क और विवेकवाद के विचार लोकप्रिय साहित्य में भी जगह पाने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

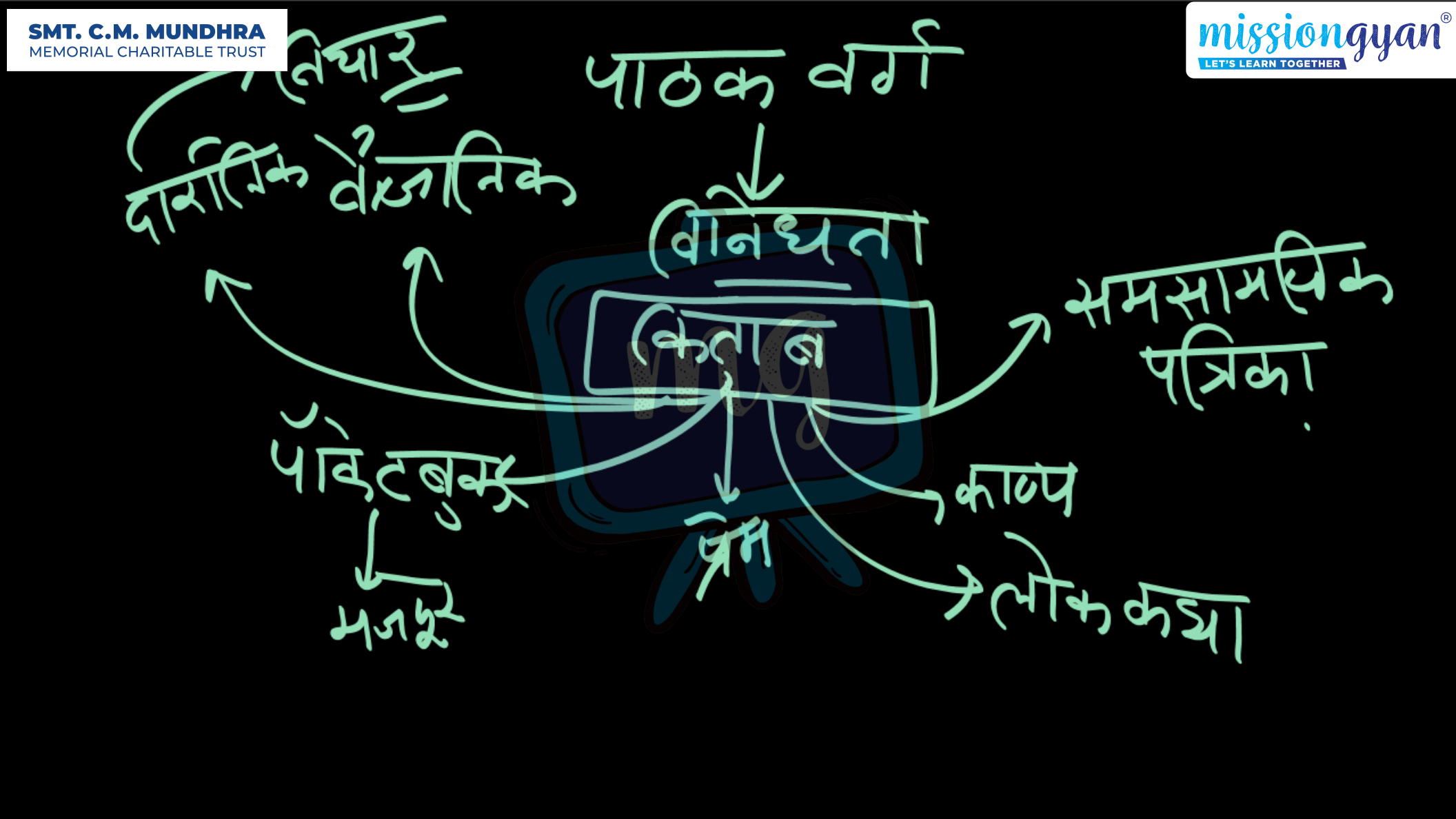

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

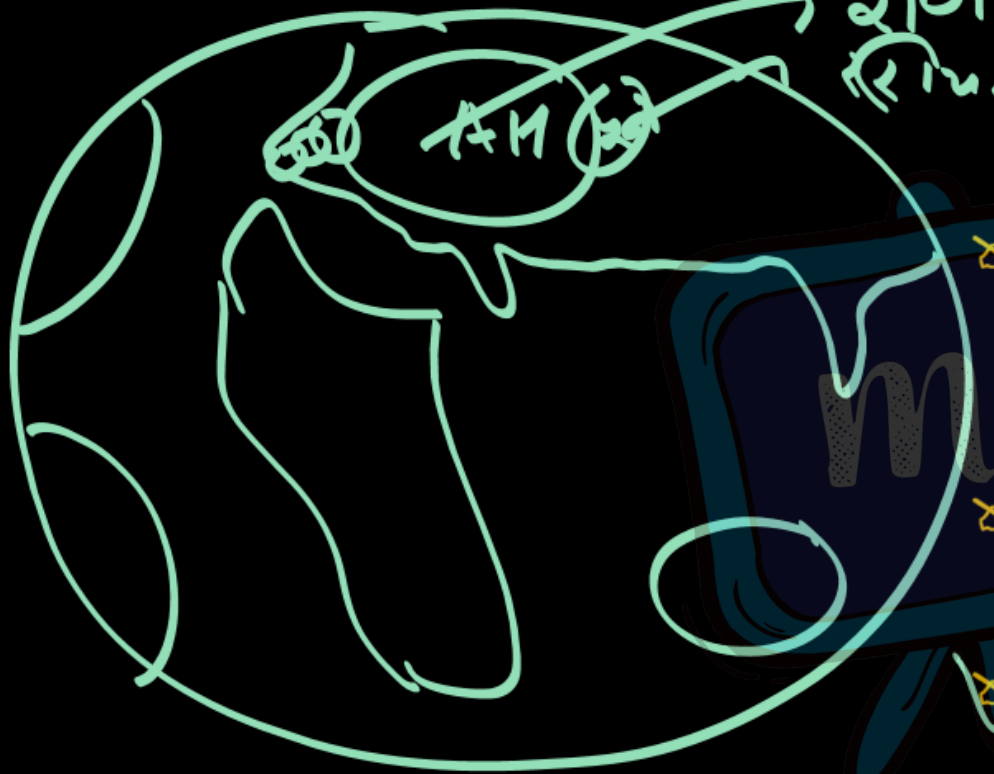

दुनिया के जालिमों अब हिलोगे तुम :-

- 18वीं सदी के मध्य तक यह आम विश्वास बन चुका था कि किताबों के जरिये प्रगति और ज्ञानोदय होता है।
- कई सारे लोगों का मानना था कि किताबें दुनिया बदल सकती है।
- किताबें निरकुशवाद और आतंकी राजसत्ता से समाज को मुक्ति दिलाकर ऐसा दौर लायेंगे जब विवेक और बुद्धि का राज होगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

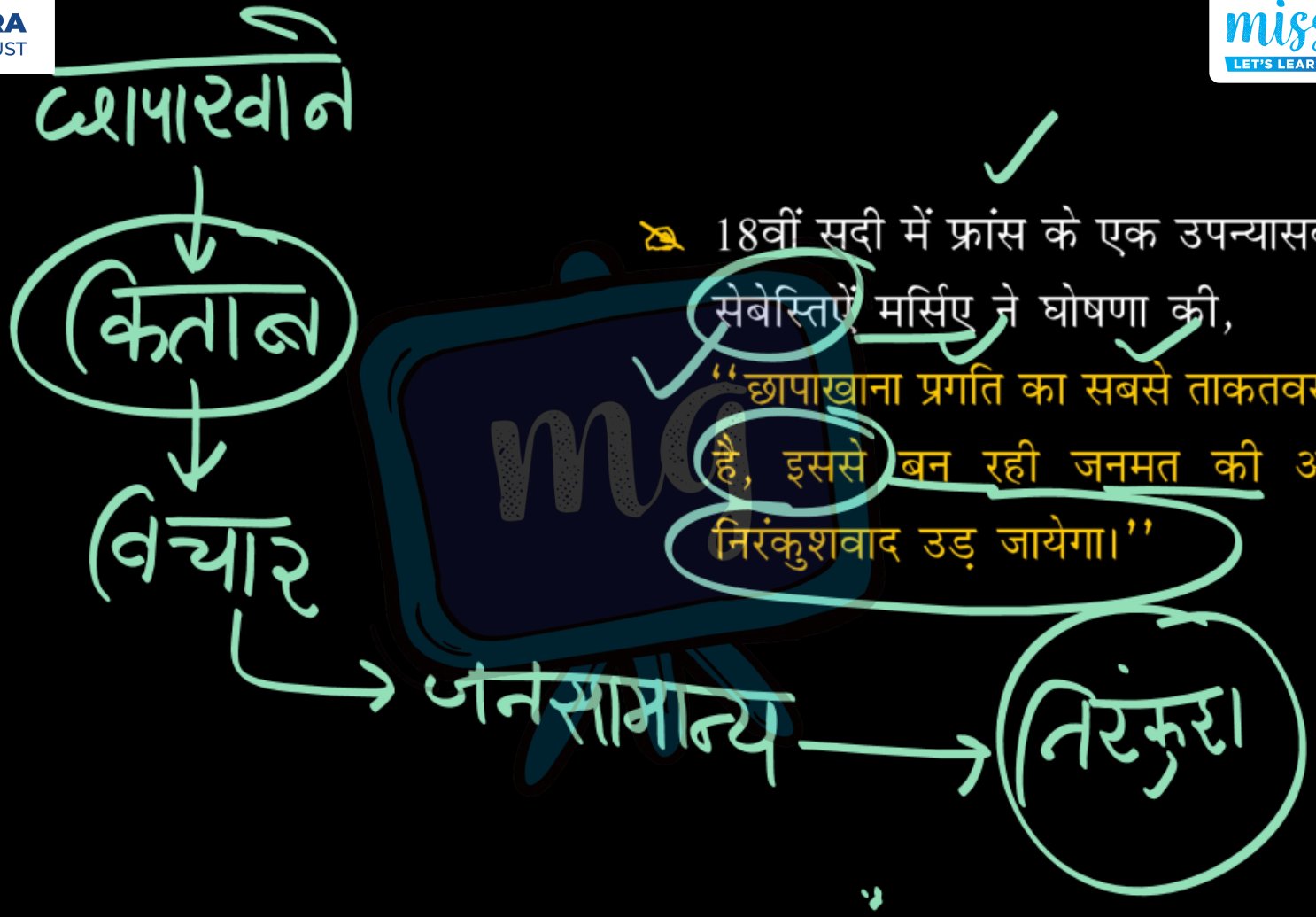

- 18वीं सदी में फ्रांस के एक उपन्यासकार लुई सेबेस्तिएं मर्सिए ने घोषणा की,

"छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवर औजार है, इससे बन रही जनमत की आँधी में निरंकुशवाद उड़ जायेगा।"

मर्सिए ने अपनी एक किताब में छपे शब्द की ताकत को यूं बयान किया :-

''अगर किसी ने मुझे पढ़ते देखा होगा तो उसने मुझे उस प्यासे की तरह पाया होगा जो शुद्ध ताजा पानी मिलने पर गटगट पीने लगता है.....

बड़े एहतियात से लालटेन जलने के बाद मैं खुद को किताबों में डुबा देता था।

और वाक और अर्थ के प्रवाह में मैं पन्ना-दर-पन्ना बहता चला जाता था अनायास और अनजान।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खामोशी के साये में घड़ियाल हर घंटे बनजा चला जाता था, पर मुझे सुनाई नहीं पड़ता था। तेल खत्म होने से मेरी लालटेन की लौ पीली पड़ने लगती थी, पर मैं था कि पढ़ता जाता। मैं बत्ती उठाने की जहमत भी नहीं लेता था कि मेरे आनंद में व्यवधान न पड़े। और ये नये विचार किस वेग से मेरे सिर में घुसते थे। मेरी वृद्धि कैसे उन्हें आत्मसात् करती थी।''

रॉबर्ट डार्नटन की किताब :- द फौरबिडेन बेस्ट - सेलर्स ऑफ प्री-रेवॉलुशनरी फ्रांस - 1995 से उद्धृत

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

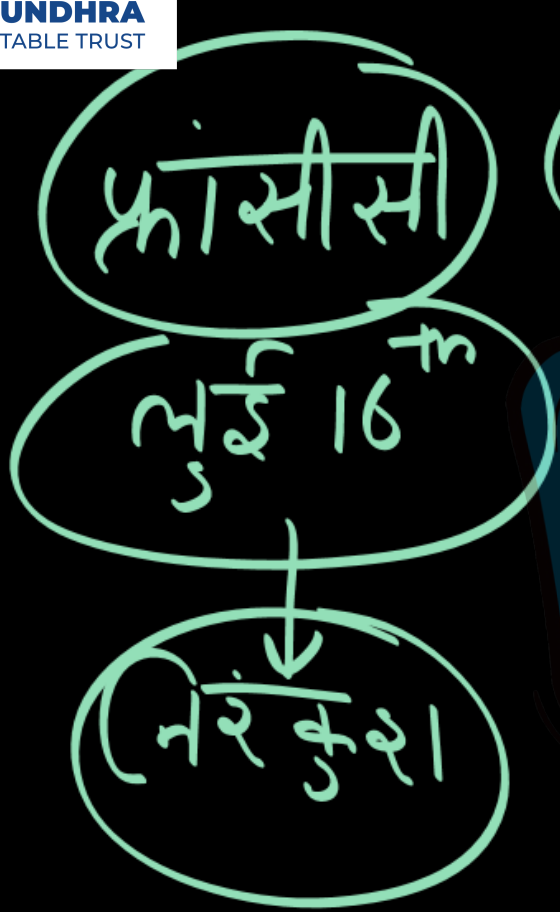

मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी क्रांति :-

- कई इतिहासकारों का मानना है कि मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियां रचीं।
- इसके लिए हम 3 तरह के तर्क देखते हैं :-

पहला :-

- छपाई के चलते चिंतकों के विचारों का प्रसार हुआ।
- उनके लेखन ने अंधविश्वास और निरंकुशवाद की आलोचना पेश की।

- उन्होंने रीति-रिवाजों की जगह विवेक के शासन पर बल दिया।
- उनकी माँग थी कि हर चीज को तर्क और विवेक की कसौटी पर ही कसा जाये।
- उन्होंने चर्च की धार्मिक तथा राज्य की निरंकुश सत्ता पर प्रहार करके, परंपरागत रूप से चल रही सामाजिक व्यवस्था को दुर्बल कर दिया।
- वॉल्तेयर और रूसो के लेखन का व्यापक पाठक वर्ग था।
- इनके पाठक दुनिया को एक नये आलोचनात्मक सवालिया और तार्किक नजरिये से देखने लगे थे।

दूसरा :-

- छपाई ने वाद विवाद और संवाद की नयी संस्कृति को जन्म दिया।
- सारे पुराने मूल्य, संस्थाओं और कायदों पर आम जनता के बीच बहस होने लगीं और पुनर्मूल्यांकन का सिलसिला शुरू हुआ।
- तर्क की ताकत से परिचित यह नयी 'पब्लिक' धार्म और आस्था को प्रश्नांकित करने लगी थी।
- इस प्रकार से बनी दुनिया से ही सामाजिक क्रांति के नये विचारों का सूत्रपात हुआ।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

तीसरा :-

- 1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाले साहित्य का ढेर लग चुका था।
- अब सामाजिक व्यवस्था को लेकर तमाम सवाल खड़े किये गये।
- कार्टूनों और व्यंग्य चित्रों में यह भाव उभरता था कि जनता तो मुश्किलों में फंसी है जबकि राजशाही भोग विलास में डूबी हुई है।
- भूमिगत घूमने वाले इस साहित्य ने लोगों को राजतंत्र के खिलाफ भड़काया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

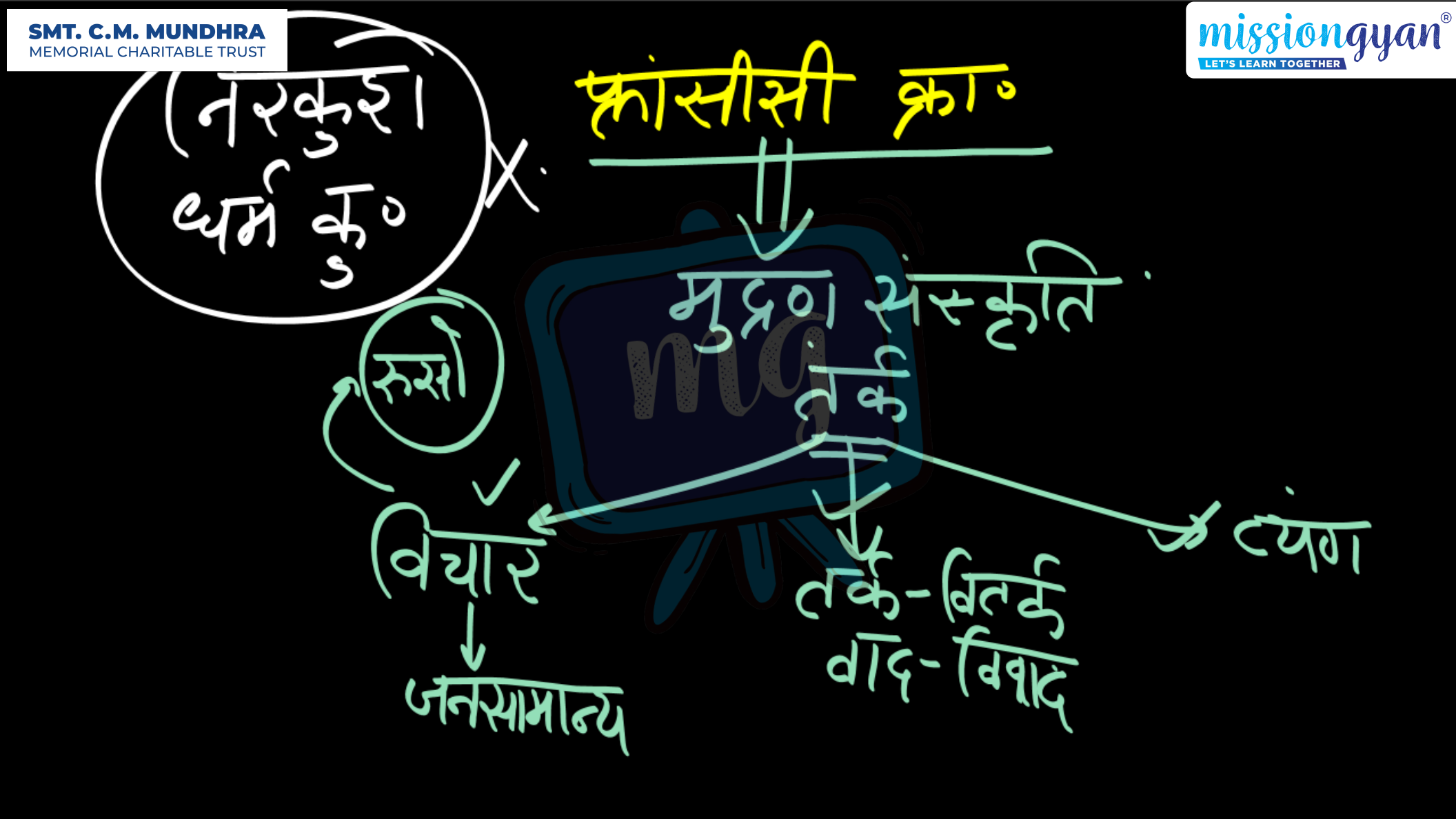

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कुलीन वर्ग फायदा

मजदूर कारीगर कर



- इस व्यंग्य चित्र में दिखाया गया है कि जनसाधारण किसान, कारीगर और मजदूर – किस तरह मुश्किल हालात में थे, जबकि जिंदगी के मजे लेने वाला कुलीन वर्ग उनका दोहन करता है।
- इस तरह के कार्टूनों के चलन से क्रांति के पहले लोगों के दिल दिमाग पर खासा असर हुआ।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

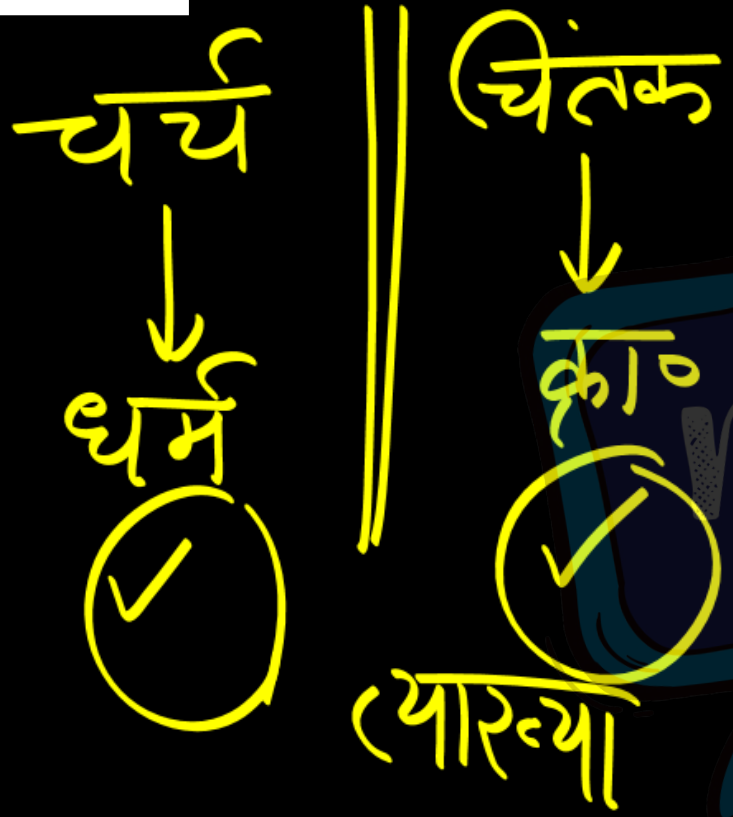

- इसमें कोई शक नहीं कि छपाई ने विचारों को फैलाने में मदद की।
- लेकिन लोग हर तरह की सामग्री पढ़ते थे। एक तरफ वे रूसों और वॉल्तेयर पढ़ रहे थे तो दूसरी तरफ चर्च और राज्य का प्रोपगैंडा भी।
- वे कुछ विचारों को स्वीकारते थे तो कुछ को नकारते भी थे।
- फिर चीजों को अपने ढंग से व्याख्या भी करते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस तरह से चाहे मुद्रण ने उनके मानस को सीधे तौर पर भले ही नहीं रचा हो, पर इसने अलग एंग से सोचने की संभावनाऐं जरूर खोलीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

15, 16, 17, 18

साक्षरता

शिक्षा

अनिवार्य

उन्नीसवीं सदी

- 19वीं सदी में यूरोप ने जन-साक्षरता में लंबी-लंबी छलाँगें लगाई।
- इस कारण से महिलाओं और बच्चों के रूप में एक नया पाठकवर्ग तैयार हुआ।

बच्चे, महिलाएं और मजदूर

बच्चे :-

- 19वीं सदी के आखिर में प्राथमिक शिक्षा के अनिवार्य होने के कारण बच्चे भी अहम पाठक बन गये थे।
- तब प्रकाशन उद्योग के लिए पाठ्य पुस्तकों का उत्पादन महत्वपूर्ण हो गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1857 में फ्रांस में सिर्फ बाल-पुस्तकें छापने के लिए एक प्रेस या मुद्रणालय स्थापित किया गया।
- इस प्रेस में पुरानी और नई दोनों तरह की परी-कथाओं और लोक कथाओं का प्रकाशन किया गया।
- जर्मनी के ग्रिम-बंधुओं ने बरसों लगाकर किसानों के बीच से लोक कथाऐं जमा की।
- उनके द्वारा एकत्रित सामग्री को संपादन कर 1812 में उन कहानियों का संकलन छापा गया।

- बच्चों के लिए अनुपयुक्त सामग्री, या जो चीजें कुली वर्गों को अश्लील लगती थीं, उन्हें प्रकाशित संस्करण में शामिल नहीं किया जाता था।
- इस प्रकार से पुरानी ग्रामीण लोककथाओं को एक नया रूप मिला।
- हालांकि छपने से वे दर्ज तो हुईं लेकिन उनका रूप बदल गया था।